# इकाई 6 : रूपांतरण : प्रकार और स्तर

**इकाई की रूपरेखा**


6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 रूपांतरण के प्रकार : भाषा का संदर्भ

6.2.1 आंतर–भाषिक रूपांतरण (Intra-Language Adaptation)

6.2.2 अंतर–भाषिक रूपांतरण (Inter-Language Adaptation)

6.3 रूपांतरण के प्रकार : प्रस्तुति का संदर्भ

6.3.1 पाठ का पाठ रूप में रूपांतरण

6.3.2 पाठ रूप का मंचीय प्रस्तुतीपरक रूपांतरण

6.3.3 पाठ का श्रव्य रूपांतरण

6.3.4 पाठ का स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण

6.4 रूपांतरण के स्तर

6.4.1 भाषिक रूपांतरण (linguistic adaptation)

6.4.2 विषय–वस्तुपरक रूपांतरण (thematic adaptation)

6.4.3 विधात्मक रूपांतरण (formal adaptation)

6.4.4 प्रारूपिक रूपांतरण (format adaptation)

6.4.5 देशीकरण (domestication)

6.4.6 विनियोगीकरण (appropriation)

6.5 सारांश

6.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

6.7 उपयोगी पुस्तकें


## 6.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- भाषा के संदर्भ में रूपांतरण के प्रकारों से परिचित हो सकेंगे;
- प्रस्तुति के संदर्भ में 'रूपांतरण' के विविध प्रकारों की जानकारी हासिल कर सकेंगे; और
- रूपांतरण के विविध स्तरों को समझ सकेंगे।

## 6.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप 'रूपांतरण' (Adaptation) की संकल्पना और स्वरूप से परिचित हो चुके हैं। उसका अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया है कि रूपांतरण से क्या अभिप्राय है और इसे जीवविज्ञान, समाजशास्त्र आदि किन–किन संदर्भों में व्यवहार

में लाया जाता है। इकाई के अध्ययन के दौरान आपने अनुभव किया होगा कि रूपांतरण का अनुवाद से भी संदर्भ जुड़ता है। उल्लेखनीय यह है कि इसे 'अनुवाद' शब्द के पर्याय के रूप में भी देखा जाता है और एक प्रकार–विशेष के रूप में भी। इसी क्रम में हमने अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण के अर्थ–स्वरूप और उसके विविध आयामों पर भी प्रकाश डाला है। आप यह भी जान चुके हैं कि इसकी आवश्यकता क्यों है और, इसमें समतुल्यता का संदर्भ क्या है? इकाई में इस प्रश्न पर भी विचार किया गया है कि रूपांतरण को मूल सृजन माना जाता है या कृत्रिम कार्य–व्यापार। इकाई के अंत में रूपांतरणकर्ता के लिए अपेक्षित गुणों का वर्णन किया गया है। इस प्रकार वह इकाई रूपांतरण की संकल्पना एवं स्वरूप को अभिव्यक्त करने वाले विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालती है।

प्रस्तुत इकाई भी रूपांतरण से ही संबंधित है। इसमें हम सबसे पहले भाषा के संदर्भ में रूपांतरण के प्रकारों पर विचार कर रहे हैं। इस इकाई में आपको बताया गया है कि भाषा के परिप्रेक्ष्य में यह सम और विषम भाषा रूपांतरण का रूप लिए हुए है। साथ ही आपको यह भी बताया जा रहा है कि यह कितने प्रकार का है। रूपांतरण हमें 'पाठ का पाठ रूप में', 'पाठ रूप की मंचीय प्रस्तुतीपरक अंतरण', 'पाठ का श्रव्यांतरण' और 'पाठ का स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण' देखने को मिलता है। ये सभी आयाम रूपांतरण, अनुवाद व्यवहार के क्षेत्र का रूप लिए हुए भी हैं।

रूपांतरण का अनुवाद से संदर्भ केवल यहीं तक व्याप्त नहीं है। रूपांतरण के हमें अनेक स्तर नजर आते हैं। जैसे, भाषिक रूपांतरण (linguistic adaptation), विषय–वस्तुपरक रूपांतरण (thematic adaptation), विधात्मक रूपांतरण (formal adaptation), प्रारूपिक रूपांतरण (format adaptation), 'देशीकरण' (domestication), और 'विनियोगीकरण' (appropriation)। रूपांतरण के इन विभिन्न स्तरों से भी आपको परिचित कराया जा रहा है। आइए, अब हम, भाषा के संदर्भ में 'रूपांतरण' के प्रकारों के बारे में जानें।

## 6.2 रूपांतरण के प्रकार : भाषा का संदर्भ

अब तक की गई चर्चा से यह स्पष्ट है कि जीवविज्ञान, समाजशास्त्र, रचनात्मक कर्म और साहित्यिक संदर्भों के साथ–साथ अनुवाद चिंतन जगत आदि में 'रूपांतरण' शब्द की व्याप्ति है। समाजशास्त्र और जीवविज्ञान के संदर्भ में रूपांतरण पर विचार करना हमारा ध्येय नहीं है। अब बात रचनात्मक कर्म और अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में रूपांतरण की है। रचनात्मक कर्म और अनुवाद – इन दोनों ही संदर्भों के मूल में 'भाषा–कर्म' है। इसलिए रूपांतरण के अन्य पक्षों की यहाँ केवल भाषा को ध्यान में रखते हुए ही विवेचन किया जा रहा है।

वैसे तो यह स्वीकार किया जाता है कि कोई भी रचना अपने आप में मूल न होकर स्वयं में एक अनुवाद ही होती है, जिसे अनुवाद चिंतन जगत में 'विचार का अनुवाद' कहा जाता है। यानी कोई भी रचना, विचार की भाषिक अभिव्यक्ति होती है। लेकिन, जब हम रूपांतरण के संदर्भ में कृति पर विचार करें तो यह देखना होगा कि जब किसी एक पाठ को दूसरे पाठ में ढाला जा रहा होता है तो भाषा के संदर्भ में पाठ के रूप का यह अंतरण दो प्रकार से संभव होगा :

(1) आंतर–भाषिक रूपांतडरण (Intra-Language Adaptation); और

(2) अंतर–भाषिक रूपांतरण (Inter-Language Adaptation)।



'अंतर–भाषिक रूपांतरण' वास्तव एक भाषा के पाठ के रूप में दूसरी भाषा में अंतरण होने

के कारण भाषा के स्तर पर भिन्नता आ जाती है। इसलिए इसे 'विषम भाषा रूपांतरण' (Different Language Adaptation) भी कहा जाता है। जबकि, 'आंतर–भाषिक रूपांतरण' में भाषा के स्तर पर कोई बदलाव नहीं होता यानी मूल पाठ के रूप का तो अंतरण होता है, लेकिन उसकी भाषा वही बनी रहती है। इसलिए 'आंतर–भाषिक रूपांतरण' को 'सदृश भाषा रूपांतरण' (Same Language Adaptation) भी कहा जाता है। आइए, अब इन दोनों प्रकार के रूपांतरणों पर विचार करें।

### 6.2.1 आंतर–भाषिक रूपांतरण (Intra- Language Adaptation)

मूलतः दो भाषाओं के बीच की गतिविधि होने के कारण 'अंतर–भाषिक रूपांतरण' को अनुवाद की श्रेणी में शामिल किया जाता है। लेकिन, यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या 'आंतर–भाषिक रूपांतरण' को अनुवाद के एक प्रकार विशेष की श्रेणी में शामिल किया जाना चाहिए?

'आंतर–भाषिक रूपांतरण' (अर्थात 'सदृश भाषा रूपांतरण' अथवा 'समान भाषा रूपांतरण') का संबंध केवल एक भाषा के पाठ को उसी भाषा में रूपांतरित कर देने से है। इसमें रूपांतरित पाठ की भाषा वही बनी रहती है जिसमें उसे मूल में रूप में लिखा गया है। स्वाभाविक है कि इस प्रकार के अंतरण में भाषा परिवर्तित नहीं होता, केवल उसके रूप में बदलाव लाया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि पाठ में जो भी बदलाव (अंतरण) किया जाएगा, वह लिखित पाठ की विधा में परिवर्तन से संभव होगा। यह एक विधा–विशेष में लिखित स्रोत भाषा सामग्री की विधा को परिवर्तित करते हुए उसी भाषा की किसी अन्य साहित्यिक विधा में रूपांतरित करना है। जैसे, हिंदी में लिखी किसी कहानी का हिंदी में नाट्य–रूपांतरण करना। वहीं, भिन्न भाषा रूपांतरण करते समय, मूल पाठ के रूप और भाषा के स्तर पर परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार के रूपांतरण को 'अंतरविधात्मक रूपांतरण (Inter-genre adaptation) कहा जाता है। शेक्सपियर के अंग्रेजी नाटकों को चार्ल्स लैंब और मेरी लैंब द्वारा कहानियों के रूप में *Tales of Shakespeare* शीर्षक से प्रकाशन, रूपांतरण का उदाहरण है।

लेकिन, यहाँ यह संकेत करना भी अनुचित न होगा कि किसी एक विधा में रचित साहित्यिक कृति को उसी विधा में अंतरित करना भी इसी 'अंतरविधात्मक रूपांतरण' का हिस्सा माना जाता है। इसे स्पष्ट करने के लिए हम उदाहरण के तौर पर प्रेमचंद के उपन्यास *रंगभूमि* का उल्लेख कर सकते हैं। अपने आकार–प्रकार में अपेक्षाकृत विस्तृत रूप लिए हुए *रंगभूमि* का विद्यार्थी संस्करण देखा जा सकता है। इस प्रकार के रूपांतरण में रचना के विशिष्ट तत्वों को तो बनाए रखा जाता है, किंतु मूल के तुलनात्मक रूप में गौण तत्वों को हटाकर संक्षिप्त संस्करण तैयार कर लिया जाता है। इसके अलावा, रूपांतरण की इस प्रक्रिया में मूल पाठ के जटिल संदर्भों को स्पष्टता प्रदान करते हुए उसे विस्तार प्रदान करने का आयाम भी शामिल रहता है। इस प्रकार के प्रयास के पाठ को सहज–सरल और संप्रेषणीय बनाना मूलभूत उद्देश्य होता है। तात्विक दृष्टि से देखें तो 'अंतरविधात्मक रूपांतरण' में भाषा के स्तर पर कोई बदलाव नहीं हो रहा होता है और वह एक ही बनी रहती है, इस आधार पर यह आंतरभाषिक (Intra-lingual) गतिविधि है।

इस आंतर–भाषिक (Intra-lingual) गतिविधि का विस्तार हमें नाट्य विधा में भी नजर आता है। हालाँकि यह सही है कि नाटक को मंच पर प्रस्तुति के लिए ही लिखा जाता है, इसलिए वह रूपांतरण नहीं माना जाना चाहिए। लेकिन साहित्य जगत की ऐसी विभूतियाँ भी हैं जिनके नाट्य–साहित्य की मंचीय प्रस्तुति के लिए उनके नाटकों को रूपांतरित करने का कार्य भी किया गया है। इस संदर्भ में, उदाहरण के तौर पर, जयशंकर के '*चंद्रगुप्त*' नाटक का उल्लेख किया जा सकता है, जिसे मंच पर प्रस्तुति के लिए '*अभिनव*

*चंद्रगुप्त* के तौर पर रूपांतरित किया गया और बाद में इसे इसी शीर्षक से प्रकाशित भी किया गया।

अनुवाद सिद्धांत चिंतन में जब हम 'आंतरभाषिक अनुवाद' की बात करते हैं तो 'अंतर–विधात्मक अनुवाद' भी उसी के अंतर्गत समाहित हो जाता है। इस तरह, अनुवाद के व्यापक संदर्भ में अंतर–विधात्मक रूपांतरण भी अनुवाद के विविध प्रकारों में से एक प्रकार है। लेकिन, जब हम अनुवाद के सीमित संदर्भ (अर्थात दो भाषाओं के बीच की गतिविधि) की कसौटी पर परखें तो यह अनुवाद चिंतन का विषय सिद्ध नहीं होता। अनुवाद के इस सीमित संदर्भ को 'वास्तविक अनुवाद' (Translation Proper) माना जाता है। वैसे, अनुवाद चिंतन के आधुनिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा, भले ही समान हो या फिर और विषम, एक पाठ की विषय–वस्तु को, ढाँचे और क्रम आदि को अपनी रुचि, सुविधा और आवश्यकता के अनुसार बदलते हुए प्रस्तुत करना रूपांतरण है। रूपांतरण की प्रक्रिया में, रूपांतरणकर्ता अपनी संवेदनशीलता का मूल स्रोत, उसकी विषय–वस्तु या फिर प्रारूप आदि का माध्यम की आवश्यकता के अनुसार तादात्म्य स्थापित करते हुए रूपांतरण कार्य करता है। कार्य की प्रकृति की समानधर्मिता के कारण अनुवाद और रूपांतरण एक ही डोरी से बँधे हुए नजर आते हैं।

### 6.2.2 अंतर–भाषिक रूपांतरण (Inter-Language Adaptation)

इसमें कोई संदेह नहीं कि अंतर–भाषिक रूपांतरण (विषम भाषा रूपांतरण), अनुवाद की श्रेणी में शामिल किया जाता है क्योंकि इसका संबंध मूलतः दो भाषाओं के बीच की गतिविधि से है। इस दृष्टि से देखें तो इस इकाई में जो आगे चर्चा की जाएगी, वह विषम भाषा रूपांतरण का संदर्भ लिए हुए ही होगी। लेकिन, मुख्य प्रश्न उठता है कि क्या 'आंतर–भाषिक रूपांतरण' (सदृश भाषा रूपांतरण) भी अनुवाद के एक प्रकार विशेष की श्रेणी में शामिल आता है। इस पर अगले भाग में विस्तार से चर्चा की जा रही है।

## 6.3 रूपांतरण के प्रकार : प्रस्तुति का संदर्भ

अब तक किए गए अध्ययन से अब आपको यह स्पष्ट हो गया है कि रूपांतरण की अपनी प्रासंगिकता और महत्व है। रूपांतरण के जो प्रकार निर्धारित किए जा सकते हैं, वे हैं :

1. पाठ का पाठ रूप में रूपांतरण
2. पाठ रूप का मंचीय प्रस्तुतीपरक रूपांतरण
3. पाठ का श्रव्य रूपांतरण
4. पाठ का स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण

आइए, इन पर विस्तार से विचार करें।

### 6.3.1 पाठ का पाठ रूप में रूपांतरण

'पाठ का पाठ रूप में रूपांतरण' के अंतर्गत किसी भाषा में रचित पाठ्य साहित्य रूप को उसी अथवा दूसरी भाषा के साहिय पाठ के रूप ही रूपांतरित किया जाता है। यहाँ 'पाठ' का अर्थ किसी भी विधा या रूप में लिखित सामग्री से है। यह लिखित सामग्री कोई पुस्तक भी हो सकती है, कोई लेख भी हो सकता है या फिर कहानी–कविता, उपन्यास आदि किसी भी विधा में रचित साहित्य।

पाठ का पाठ रूप में यह रूपांतरण समान भाषा में भी हो सकता है और भिन्न भाषा में भी। जब किसी एक भाषा के शब्दों के माध्यम से रूपाकार प्राप्त किसी साहित्यिक पाठ को अन्य भाषा के शब्दों में ढालकर प्रस्तुत कर प्रस्तुत किया जाता है तो वह 'पाठ से पाठ रूपांतरण' कहलाएगा। पाठ से पाठ का विषम भाषा रूपांतरण (Different Language Adaptation) में भाषा के स्तर पर परिवर्तन तो मुख्य रहता ही है, साथ ही प्रारूप, विधा, स्थानीयता तथा विनियोगीकरण जैसे स्तरों पर भी बदलाव जरूरी होता है। अगर केवल भाषा के स्तर पर ही परिवर्तन किया जाए और अन्य स्तर मूलवत बने रहें तो वह मात्र अनुवाद होगा, रूपांतरण नहीं। इसलिए, व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो रूपांतरण, अनुवाद के एक महत्वपूर्ण पक्ष को लिए हुए भले ही हो, लेकिन वह स्वयं में अपनी पृथक सतता रखता है।

जब किसी पाठ को भिन्न भाषा रूप में रूपांतरित किया जाता है तो उसमें रूपांतरण के विभिन्न स्तरों में से किसी एक अथवा एक से अधिक स्तरों पर बदलाव किया जाता है। परिवर्तन के ये विभिन्न स्तर कई आयाम लिए हुए होते हैं। यही कारण है कि रूपांतरित पाठ छायानुवाद, संक्षिप्त संस्करण (abridged version), विस्तारानुवाद और यहाँ तक कि नए पाठ के रूप में पुनर्सृजित या अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद भी किया हुआ हो सकता है। ये सभी रूपांतरण, भाषा रूपांतरण को व्यापक अर्थ–संदर्भ प्रदान करते हैं।

इस संदर्भ में भारतीय महाकाव्य '*रामायण*' का चक्रवर्ती सी. राजगोपालाचारी के द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। राजगोपालाचारी ने मूल रामायण का अंग्रेजी में संक्षिप्त संस्करण तैयार किया। यह अनुवाद पाठ का पाठ में 'रूपांतरण' का इस दृष्टि से उदाहरण प्रस्तुत करता है कि उन्होंने पद्यबद्ध मूल रचना की गद्य रूप में और इतर भाषा में अनूदित किया था। इस तरह, उनका यह अनुवाद, अंतर–विधात्मक और पाठ से पाठ का विषम भाषा रूपांतरण का भी आयाम लिए हुए है।

### 6.3.2 पाठ रूप का मंचीय प्रस्तुतीपरक रूपांतरण

यह चर्चा की जा चुकी है कि कोई भी लिखित सामग्री 'पाठ' है। जहाँ तक 'मंच' का संबंध है, यह प्रस्तुति आधारित होता है। 'मंच' शब्द 'रंगमंच' का संक्षिप्त रूप है। 'रंगमंच' किसी कथानक के रूप में व्यक्त होने वाले मनुष्य के विचारों–भावनाओं आदि को शब्दों, हाव–भाव और स्थितियों को दर्शकों के समक्ष अभिनय के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं जीवंत प्रस्तुति की कला–विधा है।

जब किसी एक भाषा के पाठ को रंगमंच पर प्रस्तुति के लिए दूसरी भाषा में ढाला जाता है तो वह 'पाठ रूप की मंचीय प्रस्तुति में रूपांतरण' कहलाएगा। यह रूपांतरण दो रूपों में संभव है – (1) पाठ रूप में लिखित नाट्य साहित्य का मंचीय रूपांतरण; और (2) नाट्येतर साहित्य (पाठ) का मंचीय रूपांतरण। इन दोनों प्रकार के रूपांतरण को 'नाट्य रूपांतरण' कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि रूपांतरण के ये दोनों प्रकार, समान भाषा के संदर्भ में तो संभव हैं ही, विषम भाषाओं में अंतरित करने के स्तर पर भी संभव हैं।

हालाँकि यह सही है कि नाटक को मंच पर प्रस्तुति के लिए ही लिखा जाता है, इसलिए वह रूपांतरण नहीं माना जाना चाहिए। लेकिन साहित्य जगत की ऐसी विभूतियाँ भी हैं जिनके नाट्य–साहित्य की मंचीय प्रस्तुति के लिए उनके नाटकों को रूपांतरित करने का कार्य भी किया गया है। इस संदर्भ में, उदाहरण के तौर पर, जयशंकर के '*चंद्रगुप्त*' नाटक का उल्लेख किया जा सकता है, जिसे मंच पर प्रस्तुति के लिए '*अभिनय चंद्रगुप्त*' के तौर पर रूपांतरित किया गया और बाद में इसे इसी शीर्षक से प्रकाशित भी किया गया।

मूल रूप से नाट्य विधा में लिखे पाठ को मंचीय प्रस्तुति को यथावत या फिर कतिपय संशोधनों के साथ रूपांतरित किया जा सकता है। इसके अलावा, पाठ रूप में उपलब्ध लिखित नाटक को एक भिन्न सामाजिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ में तथा एक भिन्न अर्थ के साथ नाटक रूप में भी रूपांतरित कर प्रस्तुत करना भी संभव है। इस संदर्भ में 19वीं–20वीं शताब्दियों में भारत की विभिन्न भाषाओं में रूपांतरित एवं मंचित शेक्सपीयर के नाटकों का संकेत किया जा सकता है जो भिन्न अर्थों और अंतर्वस्तु लिए हुए रहे।

पाठ रूप की मंचीय प्रस्तुति में रूपांतरण के संदर्भ में श्रीलाल शुक्ल के हिंदी उपन्यास '*राग दरबारी*' का रंगमंच की दृष्टि से रूपांतरण विशेष तौर उल्लेखनीय है, जिसका बाद में, आगे चलकर टेलीविजन सीरियल के रूप में प्रसारण किया गया था।

साहित्यिक पाठ की मंचीय प्रस्तुति के लिए रूपांतरण करते समय पाठ के आकार, समय, मंची साधन–उपकरण (जैसे, परिधान एवं रूप–सज्जा (मेकअप), प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि के जरिए विशेष प्रभाव, मंच सज्जा आदि) के प्रति सावधानी और सतर्कता बरतनी जरूरी होती है ताकि मूल रचना की संवेदना का सार्थक एवं प्रभावी तरीके से संप्रेषण संभव हो सके।

### 6.3.3 पाठ का श्रव्य रूपांतरण

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी के शुरू में प्रगति ने रंगमंचीय तकनीक के साथ–साथ जनसंचार माध्यमों के विकास से रेडियो की तकनीक में भी नाट्य प्रस्तुति को विशेष आयाम प्रदान किया। यह आयाम हमें 'रेडियो नाटक' और 'रेडियो रूपांतर' के रूप में नजर आता है। यह पारंपरिक नाट्य लेखन की सुदीर्घ परंपरा में नया मोड़ रहा था। पद्मश्री चिरंजीत हिंदी के पहले नाटककार हैं, जो रेडियो–नाटककार के रूप में सर्वाधिक ख्याति–प्राप्त माने जाते हैं।

स्थिति यह रही कि रेडियो के लिए रूपांतरण भी विविध रूप ग्रहण करता जा रहा है। इसका विस्तार हमें पाठ को श्रव्य रूप में प्रस्तुति के लिए अंतरण किए हुए में नजर आता है। हालाँकि श्रव्य प्रस्तुति के लिए पाठ को लिखित पाठ का ही रूप दिया जाता है, किंतु उसमें पाठ को श्रव्यता के आलोक में अंतरित किया जाता है। उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के रूप में किसी भी भाषा के पाठ को रेडियो पर प्रसारित करने के लिए रूपांतरित किया जाता है।,

रेडियो के लिए रूपांतरण, उपन्यास, कहानी, कविता आदि के रूप में साहित्यिक पाठ की भाषा में ही या फिर उसका अनुवाद करके दूसरी भाषा में श्रोताओं तक पहुँचाने का प्रयास है। स्वाभाविक है कि इस प्रस्तुति में पाठ को प्रभावशाली तरीके से श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है ताकि वे अपने भाषा में लिखे या फिर दूसरी भाषा के कथा साहित्य या नाटक आदि का अनूदित संस्करण का श्रव्य माध्यम से आस्वादन कर सकें, आनंद ले सकें। कहने का अभिप्राय यह है कि पाठ श्रव्य रूपांतरण उसी (समान) भाषा में भी हो सकता है और भिन्न (इतर) भाषा में भी। लेकिन, इतना अवश्य है कि रेडियो रूपी श्रव्य माध्यम के लिए रूपांतर किए जाने की वजह से इसे 'रेडियो रूपांतर' भी कहा जाता है।

साहित्यिक पाठ का श्रव्य रूपांतरण करते समय रचना को नए स्थापत्य में तैयार किया जाता है। इसमें मूल पाठ के नाटकीय तत्वों का समावेश सर्वप्रमुख है। इसमें पाठ की वर्णनात्मक संरचना और वर्णन आदि के स्तर पर स्थानीयकरण तो किया ही जाता है, साथ ही माध्यम की अपेक्षाओं को भी ध्यान में रखा जाता है। पाठ का श्रव्य रूपांतरण करने की प्रक्रिया में यह ध्यान रखा जाना जरूरी होता है कि रचना के मूल तत्व का उसमें समावेश हो जाए और उसमें नाटकीयता हो। केवल कथात्मकता और वर्णनात्मकता से रूपांतरित

पाठ्य साहित्य–रूप प्रसारण योग्य नहीं माना जाता है। नाटकीयता से श्रोता बँधे रहते हैं। लेकिन, साथ ही, मूल संवेदना का सहृदय श्रोताओं तक पहुँचना भी जरूरी होता है ताकि वे साहित्य का सुनकर आस्वादन कर सकें। इस प्रकार के रूपांतरण में यह ध्यान रखना जरूरी होता है रूपांतरण प्रस्तुति–माध्यम के अनुकूल और उपयुक्त होनी चाहिए।

वैसे तो किसी भी पाठ को रेडियो प्रसारण के उपयुक्त बनाने के लिए उसकी भाषा और प्रस्तुति आदि के स्तरों पर सामान्य परिवर्तन करने जरूरी होते हैं। इसे दूसरी भाषा पाठ को रूपांतरित करते समय भी ध्यान रखा जाता है। इसके अलावा, प्रसारण की समय–सीमा को ध्यान में रखते हुए बड़े प्रसंगों को एक साथ समेट कर संक्षेप में प्रस्तुत करना या फिर उनमें इस तरह से काट–छाँट करना कि वह समय पर एक–साथ या किस्तों में प्रसारित किया जा सके। श्रोताओं को बाँधे रखने के लिए रूपांतरणकर्ता कथावस्तु में कौतुहल–सृष्टि, जिज्ञासा वृद्धि आदि नाटकीयता का समावेश भी कर सकता है जिसके लिए उसमें रचनाकार की भाँति सर्जनात्मक प्रतिभा एवं कल्पना आदि अपेक्षित होता है। रूपांतरणकर्ता को सरल, सहज और बोधगम्य भाषा प्रयोग का विशेष ध्यान रखना होता है ताकि प्रसारित पाठ को सामान्य श्रोता–वर्ग भी आसानी से समझ ले। क्लिष्ट शब्द प्रयोगों से बचना जरूरी होता है। श्रव्य प्रसारण के लिए शारीरिक भाव–भंगिमा, मुख मुद्रा, रंग–निर्देश आदि का कोई स्थान नहीं होता है। इसके बदले, ध्वनि–संप्रेषण की प्रधानता होती है। इसलिए रेडियो रूपांतरण में प्रस्तुति में ध्वनि संकेतों को प्रभावशाली रूप में व्यंजित करने की अपेक्षित रहती है। श्रव्य रूपांतर में पाठ के भावाभिव्यंजक और अनिवार्य दृश्य तत्वों को ध्वनि प्रभाव या संगीत या संवाद का या फिर इन सभी का मिला–जुला प्रयोग करते समय श्रव्य तत्व में बदलने की भी अनिवार्य अपेक्षा रहती है।

देश–विदेश की अनेक भाषाओं में रचित उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के हिंदी में रेडियो–रूपांतरण करते हुए उन्हें जनसामान्य तक पहुँचाया जाता है।

### 6.3.4 पाठ का स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण

जनसंचार के विविध माध्यमों के अंतर्गत मुख्य रूप से समाचारपत्र–पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन–सिनेमा आदि आते हैं। इनमें से टेलीविजन और सिनेमा, दृश्य–श्रव्यात्मक माध्यम हैं। इसके अंतर्गत किसी एक भाषा में रचित कहानी–उपन्यास और नाटक आदि पाठ्य साहित्य–रूप को टेलीविजन अथवा सिनेमा जैसे जनसंचार माध्यम के लिए अंतरण शामिल है। जैसे, किसी भाषा में रचित उपन्यास, कहानी, नाटक आदि को उसी या दूसरी भाषा में फिल्म, टेलीविजन सीरियल आदि में फिल्मांकित करना। दृश्य–श्रव्य माध्यम से संबंधित होने के कारण इसे 'दृश्य रूपांतरण' भी कह दिया जाता है। वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास *मृगनयनी* का टेलीविजन धारावाहिक के रूप में प्रसारण वास्तव में उपन्यासों–कहानियों के दृश्य रूपांतरण का प्रमाण है।

भारतीय भाषाओं के संदर्भ में भी अंतरविधात्मक अनुवाद के उदाहरण देख जा सकते हैं। जैसे, बांग्ला के प्रतिष्ठित साहित्यकार शरतचंद चट्टोपाध्याय के बांग्ला उपन्यासों के आधार पर अब तक एक दर्जन से अधिक फिल्में बन चुकी हैं। स्थिति यहाँ तक रही है कि उनके प्रसिद्ध उपन्यास *देवदास* के आधार पर हिंदी में चार फिल्में बन चुकी हैं और वे सभी अपने समय में खूब चली हैं।

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा बांग्ला में 1917 में लिखे *देवदास* उपन्यास के आधार पर भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में वर्ष 2018 तक पंद्रह फिल्में बन चुकी हैं। वर्ष 2002 में संजय लीला भंसाली ने बड़े स्केल पर देवदास बनाई थी। भंसाली ने ही रूसी उपन्यासकार फ्योदोर दोस्तोयवस्की के रूसी उपन्यास *'व्हाइट नाइट'* का रूपांतरण *साँवरिया* नामक फिल्म के रूप में किया। यह रूपांतरण, रूसी में लिखे उपन्यास के अंग्रेजी

अनुवाद के आधार पर हुआ है। सत्यजीत राय ने बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय के 1928 में लिखे *पथेर पाँचाली* के आधार पर इसी नाम से फिल्म रूपांतरण किया तो प्रेमचंद की *सद्गति* और *शतरंज के खिलाड़ी* कहानियों का भी फिल्मांतरण किया। इसके अलावा भी उन्होंने अन्य कई साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्म रूपांतरण किए। इसी संदर्भ में भीष्म साहनी के उपन्यास *तमस*, फणीश्वरनाथ रेणु की *मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम* का फिल्मांतरण विशेष उल्लेख के अधिकारी हैं।

## 6.4 रूपांतरण के स्तर

अब तक किए गए अध्ययन के आधार पर आपको यह पता चला चुका है कि रूपांतरण का मुख्य उद्देश्य मूल के समग्र सौंदर्य को अपने (लक्ष्य भाषा–भाषी) परिवेश के अनुरूप ढालकर पाठकों के समक्ष लाना होता है। परिवेश के अनुरूप ढालने की प्रक्रिया के दौरान रूपांतरकार स्रोत भाषा सामग्री की विषय–वस्तु, ढाँचे और क्रम को अपनी रुचि, सुविधा और आवश्यकता के अनुसार बदलते हुए (लेकिन कम से कम परिवर्तन के साथ) लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है।

औपचारिक रूप से देखें तो 'रूपांतरण' में 'रूप के अंतरण' का भाव निहित है। वैसे तो कोई भी रचना एक निश्चित 'रूप' (Form) में विकसित होती है, जिसमें साहित्यकार चरित्रों आदि को ढालकर प्रस्तुत करता है। रूपाकार पाकर ही कोई भी रचना, 'रचना' का रूप धारण कर पाती है। इस तरह 'रूप' साहित्य का बाह्य परिधान होता है। मौलिक सृजन के संदर्भ में इस 'रूप' को 'साहित्य विधा', 'रचना–रूप', 'रचना–विधा' या फिर 'रूप–विधा' आदि नामों से जाना जाता है। ये सभी शब्द रचना के बाह्य रूपाकार का अर्थ–संकेत करते हैं।

रचनात्मक कर्म के संदर्भ में 'रूप' अंतर–विधात्मक रूपांतरण स्वीकार किया जाता है। किंतु जब हम अनुवाद की बात करते हैं तो वहाँ 'रूप' शब्द केवल फॉर्म (form) का पर्याय न होकर व्यापक अर्थ–संदर्भ का व्यंजक हो जाता है। अपने इस व्यापक अर्थ–संदर्भ में रूपांतरण के अंतर्गत स्रोत भाषा पाठ सामग्री के सभी 'रूपों' को लक्ष्य भाषा में अंतरित करने का भाव निहित है। यह अंतरण भाषा, कथ्य (विषय–वस्तु), विधा और अर्थ से संबंधित होता है। इस दृष्टि से भाषा के इन रूपों में मुख्य तौर पर भाषिक रूपांतरण (linguistic adaptation), विषय–वस्तुपरक रूपांतरण (thematic adaptation), विधात्मक अंतरण, प्रारूपिक अंतरण (format adaptation) के साथ–साथ अर्थपरक अंतरण (semiotic transference) शामिल है। उल्लेखनीय यह भी कि रूपांतरण की प्रक्रिया में विषय–वस्तु का रूपांतर भी व्यापक अर्थ–संदर्भ लिए हुए है। इसके अंतर्गत विषय–वस्तु के स्तर पर रचना का 'देशीकरण' (domestication) करना या फिर उसका अपनी भाषा में 'विनियोगीकरण' (appropriation) जैसे पक्ष भी शामिल हैं। रूपांतरण के ये विविध रूप व्याख्या और उदाहरण की सहायता से बोध कराने की अपेक्षा रखते हैं।

### 6.4.1 भाषिक रूपांतरण (linguistic adaptation)

'भाषिक रूपांतरण' करते समय स्रोत भाषा का अक्षरशः (अर्थात पूरी निष्ठा और ईमानदारी से) पालन नहीं किया जाता; अनूद्य सामग्री को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के आलोक में अंतरित–समायोजित किया जाता है। यह समायोजन मूल की विषय–वस्तु, संरचना और क्रम में कम से कम परिवर्तन के रूप में होता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि भाषिक रूपांतरण में मूल रचना के प्रति यथासंभव निष्ठा को व्यवहार में लाया जाता है, अक्षरशः नहीं।

### 6.4.2 विषय–वस्तुपरक रूपांतरण (thematic adaptation)

'विषय–वस्तुपरक अंतरण' में विषयवस्तु का अक्षरशः अंतरण नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए, वाल्मीकि द्वारा रचित *'रामायण'* जैसे पौराणिक ग्रंथों की पूरी कथा–वस्तु (राम कथा) अथवा अंतक्रथाओं को में से किसी कथा–वस्तु को लेकर अन्य भाषा में अंतरित करना।

### 6.4.3 विधात्मक रूपांतरण (formal adaptation)

साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचना की जाती है। संस्कृत काव्यशास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र में साहित्य–विधाओं को भिन्न–भिन्न वर्गों में निरूपित किया गया है। काव्य (प्रबंध काव्य अर्थात महाकाव्य और खंड काव्य एवं मुक्तक), नाटक और गद्य (गद्य–काव्य, उपन्यास, कहानी, निबंध, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, पत्र, डायरी, यात्रा–वृत्तांत, रिपोर्ताज़ आदि) साहित्य की विभिन्न विधाएँ हैं। जब किसी एक भाषा में और एक विधा में रचित साहित्य को दूसरी भाषा में और भिन्न विधा में अंतरित किया जाता है तो वह 'विधात्मक रूपांतरण' कहलाएगा। उपन्यास या कहानी को फिल्म में अंतरित करने को प्रारूपिक अंतरण (format adaptation) के उदाहरण के रूप में देख सकते हैं।

### 6.4.4 प्रारूपिक रूपांतरण (format adaptation)

प्रारूपिक रूपांतर में किसी साहित्येतर रचनात्मक कर्म के प्रारूप का ही इस्तेमाल करते हुए नया रचना–कर्म करने का भाव समाहित है। यह एक प्रकार से क्लोन (clone) तैयार करना है, 'क्लोनिंग' (cloning) करना है। क्लोनिंग के अंतर्गत पहले से ही विद्यमान किसी भी चीज के मूल रूपाकार का प्रतिरूपण किया जाता है, प्रतिकृति तैयार की जाती है। ध्यान देने की बात यह है कि यह प्रतिरूप हूबहू वैसा ही रूप लिए हुए होता है; उसकी अनधिकृत प्रति/नकल (unauthorised copy or imitation) होती है। प्रारूपिक रूपांतरण में मूल प्रारूप का वैसा ही रूप (प्रतिरूपण) तो तैयार कर लिया जाता है, किंतु मूल की विषयवस्तु अथवा संदेश अथवा कथ्य का उपयोग न करके अपने देश–काल की स्थिति के अनुकूल विषयवस्तु/संदेश का उपयोग किया जाता है।

जनसंचार के क्षेत्र में हुई क्रांति और विशेष तौर पर टेलीविजन और सिनेमा के विकास ने प्रारूपिक–रूपांतरण को विकसित करने का भरपूर मौका दिया है। हॉलीवुड फिल्मों के प्रारूप का भारतीय भाषाओं में कई फिल्मों में यह अंतरण परिलक्षित किया जा सकता है। बल्कि स्थिति यह हो चुकी है कि अब तो टेलीविजन भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रह गया है। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश टेलीविजन शो *Who Wants to be a Millionaire* के प्रारूप के आधार पर हिंदी के सुपर–डुपर स्टार अमिताभ बच्चन की मेज़बानी में *कौन बनेगा करोड़पति* टी.वी. सीरियल ने अपार सफलता हासिल की है। इसी प्रकार, इंग्लैंड के *Big Brother* के आधार पर हिंदी में फिल्म एक्टर सलाम खान की मेज़बानी में *बिग बॉस*, *American Idol* की तर्ज पर *इंडियन आइडल*, *America Got Talent* की तर्ज पर इंडियाज़ गॉट टेलेंट जैसे रिएलिटी टी.वी. शो इसी प्रकार के प्रारूपिक रूपांतरण के उदाहरण हैं।

उक्त सभी उदाहरण जहाँ प्रारूपिक रूपांतरण को प्रमाणित करते हैं, वहीं प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रारूपिक रूपांतरण, अनुकरण (imitation) है? वास्तविकता यह है कि अनुकरण और रूपांतरण के बीच विभाजक रेखा खींचना आसान नहीं है। टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले अनेक रिएलिटी शो ऐसे हैं जो स्वयं में किसी भाषा में तैयार रिएलिटी शो का अनुकरण भी हो सकते हैं और रूपांतरण भी।

वास्तव में, प्रारूपिक रूपांतरण के अंतर्गत मूल कार्यक्रम की वृहत संरचना यथावत बनी रहती है और उसके कुछ भागों अथवा अंशों को स्थानीयकृत रूप प्रदान कर दिया जाता है। स्थानीयकरण का यह स्तर कार्यक्रम में प्रयुक्त भाषा यानी संप्रेषण–व्यवहार की भाषा प्रयोग के स्तर पर तो नजर आता ही है, रूपकों और कार्यक्रम के संचालन से संबंधित पूरा परिवेश स्थानीय रूप में अंतरित किए हुए होता है। इस प्रकार के रूपांतरित कार्यक्रमों में एक प्रकार का अनुकरण होता है।

हालाँकि मूल के स्थान पर अपने देश–काल के संदर्भोचित विषयवस्तु/संदेश के उपयोग के कारण यहाँ प्रश्न किया जा सकता है कि क्या प्रारूप की क्लोनिंग भी रूपांतरण का अंग है? इस संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि यदि हम प्रारूप–रूपांतरण को रूपांतरण की अवधारणा में शामिल करते हैं तो टेलीविजन और सिनेमा में प्रयुक्त होने वाली प्रारूप–प्रतिकृतियों को भी रूपांतरण की श्रेणी में ही स्वीकार करना उपयुक्त होगा।

### 6.4.5 देशीकरण (Domestication)

'देशीकरण' को 'घरेलूकरण' भी कहा जाता है। अनुवाद चिंतन में जिस 'घरेलूकरण' की बात की जाती है, वह स्वयं में एक सीमित और निश्चित अवधारणा को व्यक्त करता है। 'घरेलूकरण', अनुवाद कर्म के दौरान अपनाई जाने वाली विभिन्न युक्तियों में से एक है। अनुवाद के दौरान मूल कथ्य का लक्ष्य भाषा संस्कृति में घरेलूकरण की प्रवृत्ति को परिलक्षित किया जा सकता है। इसके लिए हमें भाषा की प्रकृति और प्रवृत्ति के साथ–साथ उसकी संस्कृति को भी ध्यान में रखकर चलना होता है।

जब हम 'घरेलूकरण' का जिक्र करते हैं तो अनुवाद के संदर्भ में इसका अर्थ है – 'किसी भी स्रोत भाषा में रचित कृति के जरिए व्यक्त होने वाले कथ्य और संप्रेषित सांस्कृतिक तत्वों को लक्ष्य भाषा की जरूरतों और संस्कृति संबंधी तत्वों के साँचे में ढालते हुए स्थानीयकृत कर प्रस्तुत करना घरेलूकरण कहलाता है।'

घरेलूकरण की धारणा के विकास के मूल में अनुवादक का यह प्रयास छिपा होता है कि लक्ष्य भाषा के पाठकों को अनूदित पाठ पढ़ते समय यह अनुभूति नहीं होनी चाहिए कि वह मूल नहीं बल्कि अनूदित पाठ पढ़ रहे हैं। यानी उन्हें मूल का सा आस्वादन कराने वाले पाठ को पढ़ने की अनुभूति होनी चाहिए। अनूदित पाठ में इस अनुभूति को बनाए रखने के लिए अनुवादक घरेलूकरण की युक्ति को अपनाता है। घरेलूकरण करते समय वह लक्ष्य भाषा और संस्कृति को केंद्र में रखकर लक्ष्य भाषिक एवं सांस्कृतिक अनुकूलन (लिंग्विस्टिक एंड सोशल एडाप्टेशन) की प्रक्रिया का सहारा लेता है। उदाहरण के लिए, किसी भी अनूद्य सामग्री में आए अथवा व्यंजित स्रोत भाषा के भाषिक और सांस्कृतिक संदर्भों को यथावत प्रस्तुत न करके उनके स्थान पर लक्ष्य भाषा के समतुल्य भाषिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का समावेश करना 'घरेलूकरण' कहलाएगा। जैसे, पश्चिम जगत के पौराणिक एवं मिथकीय पात्र *Herculean* के स्थान पर भारतीय पौराणिक पात्र *भगीरथ* का प्रयोग कर अनूद्य पाठ का घरेलूकरण करना। अगर अनुवादक ऐसा प्रयोग करता है तो इससे वह स्रोत भाषा के संदेश को यथावत प्रस्तुत नहीं करता बल्कि लक्ष्य भाषा के पाठक पर बिलकुल वही प्रभाव डालता है, जो मूल लेखक ने स्रोत भाषा के पाठक पर डाला था। यह एक प्रकार से समतुल्य प्रभाव के सिद्धांत (principle of equivalent effect) पर आधारित अनुवाद को व्यक्त करता है। वहीं, अगर अनुवादक अनूद्य सामग्री में विदेशीपन को बनाए रखने का आधार लेकर चलेगा तो वह उक्त उदाहरण के संदर्भ में अनूदित पाठ में पश्चिमी पौराणिक–मिथकीय पात्र *हरक्यूलियन* को ही लिखेगा। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यह स्रोत भाषा और संस्कृति का इस तरह से घरेलूकरण करना है कि अनूदित पाठ सहज और प्रवाहमयी बन जाता है।

'घरेलूकरण' अनूद्य सामग्री को अनुवादक के द्वारा लक्ष्य भाषा की प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप स्थानीय रूप प्रदान करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में अनुवादक, अनुवाद के दौरान स्रोत भाषा में व्यक्त कथ्य को लक्ष्य भाषा की भाषिक जरूरतों और संस्कृति की अपेक्षाओं के आलोक में ढालता चलता है। स्वाभाविक है कि अनूद्य सामग्री का घरेलूकरण करते समय मूल पाठ में से कुछ अनूदित होने से छूट जाता है और लक्ष्य भाषा और संस्कृति के तत्व कुछ अनूदित पाठ में स्थान प्राप्त कर लेते हैं। स्थानीय संस्कृति एवं भाषा शैली में रचे–बसे तत्वों से संयुक्त होने पर अनूदित पाठ पूरी तरह से सहज–स्वाभाविक अर्थात मौलिक सृजन का अहसास कराने वाला बन जाता है।

### 6.4.6 विनियोगीकरण (Appropriation)

रूपांतरण का विस्तार, हमें 'विनियोगीकरण' के रूप में भी नजर आता है। अंग्रेजी के 'Appropriation' शब्द के संदर्भ में हिंदी में 'विनियोगीकरण' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'एप्रोप्रिएशन' को आम तौर पर किसी निधि अथवा थाती को अपना बनाने की प्रक्रिया से जोड़कर देखा जाता है। इस प्रक्रिया में, मूल में कुछ फेरबदल करके उसे नया रूप देकर अपने देश–काल या परिवेश के अनुकूलन बनाने का भाव निहित रहता है। विनियोगीकरण के इस अर्थ को यदि अनुवाद के संदर्भ में देखें तो यह कहा जा सकता है कि एक पाठ में आवश्यक फेरबदल करके उसे नया रूप दे देना। फेरबदल की इस प्रक्रिया में रूपांतरणकर्ता स्वतंत्रता बरत्ता है। यानी वह मूल पाठ के अर्थ और संदर्भ तो ग्रहण करता है, लेकिन उन्हें अपने परिवेश के अनुसार बदलने के स्थान पर उनके आधार पर नया पाठ तैयार कर देता है। इस तरह गृहीत की गई सामग्री में मूल अर्थ की छवि या अनुगूँज तो महसूस की जा सकती है, लेकिन उसमें लक्ष्य भाषा के परिवेश के संदर्भ में नए अर्थ और प्रासंगिकता की अनुभूति होती है।

कहने का अभिप्राय यह है कि विनियोगीकरण में आम तौर पर मूल अर्थ से इतर अर्थ की व्यंजित होता है। उदाहरण के लिए, संस्कृत में विरचित वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु *रामचरितमानस, कम्ब रामायण, अध्यात्म रामायण, रामचंद्रिका, रामावतार* आदि अनेक भाषाओं में रचित राम कथाएँ अपने मूल अर्थों और प्रसंगों से भिन्न तथा उन भाषाओं के नए परिवेश में नए अर्थ–संदर्भों में अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करती हैं। जैसे वाल्मीकि रामायण में राम नर–श्रेष्ठ के रूप में चित्रित हुए हैं यानी उनके राम में नरत्व में ही नारायणत्व नजर आता है। गोस्वामी तुलसीदास के राम नर रूप में अवतरित ब्रह्म हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वहीं रीति–कवि केशवदास की *रामचंद्रिका* में राम वह वैभवशाली राजा हैं जिनके चारों ओर सांसारिक ऐश्वर्य बिखरा हुआ है और भक्ति रस का अभाव है। और, गुरु गोविंद सिंह के *रामावतार* में राम वीर–योद्धा का रूप लिए नजर आते हैं।

नई प्रासंगिकता से युक्त पाठ का यह पुनर्जीवन, युगीन संदर्भों में ही सार्थक सिद्ध होता है। इसलिए, यदि रामकथा के परिप्रेक्ष्य में देखें तो आगे और कहा जा सकता है कि यही कथा मैथिलीशरण गुप्त की *साकेत*, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की *राम की शक्ति पूजा* और नरेश मेहता की *संशय की एक रात* में नए अर्थ–संदर्भ नजर आती है। इस तरह, आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि मूल पाठ से ग्रहण किए गए तत्वों पर और नया अर्थ–प्राप्त अभिगृहीत रचना, नया रूप धारण कर देती है, 'नई कृति' का दर्जा तक प्राप्त कर लेती है। स्वाभाविक है कि इस प्रकार की रचना में, मूल और नए अर्थ–संदर्भों का मिश्रण होगा। यह विनियोगी करने वाले व्यक्ति (कर्ता) की कौशल–संपन्नता पर निर्भर करता है कि अपने परिवेश के संदर्भ में नए पाठ को कितना प्रासंगिक बना पाता है। यहाँ यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि विनियोगीकरण की इस प्रक्रिया से गुजरी रचना का मूल पाठ से निकटता का संबंध नहीं रह जाता। इसीलिए 'एप्रोप्रिएशन' को 'हड़पना' (कंफिसकेशन) भी कह दिया जाता है।

संक्षेप में यही कहा सकता है कि रूपांतरण एक व्यापक शब्द है। अनुवाद के संदर्भ में यह भाषिक, विषयवस्तु, विधा, अर्थ के स्तरों से तो संबंधित है ही, लक्ष्य भाषा रचना के 'देशीकरण' और इसमें विनियोगीकरण तक से जुड़ा हुआ है। इन सभी संदर्भों स्रोत भाषा पाठ को लक्ष्य भाषा में अंतरित करना 'रूपांतरण' है। ध्यान देने योग्य यह भी है कि अनूदित रचनाओं में रूपांतरण के इन सभी स्तरों को कमोबेश किसी न किसी रूप में व्यवहार में लाया ही जाता है। इसीलिए कतिपय विद्वान 'अनुवाद' शब्द के स्थान पर 'रूपांतर/रूपांतरण' शब्द को प्रयुक्त करने के पक्षधर हैं।

## 6.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि भाषा और प्रस्तुति के संदर्भ में रूपांतरण कितने प्रकार का है और इसके स्तर कौन से हैं। असल में, अनुवाद अध्ययन के संदर्भ में अनुवाद में 'रूपांतरण' का व्यवहार एक प्रमुख पक्ष है, जिसमें भाषा का विशेष स्थान है। इसके आलोक में रूपांतरण अंतर–भाषिक और आंतर–भाषिक अर्थात विषम और सदृश भाषा रूप लिए है। हालाँकि आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि रूपांतरण, अनुवाद की अनेक विधाओं में से एक विशिष्ट विधा है। रूपांतरण किसी कृति आदि पर आधारित तो होता है, लेकिन इसकी प्रक्रिया विशिष्ट स्वरूप वाली होती है। यह एक भाषा सामग्री का दूसरी भाषा में कोरा अंतरण मात्र न होकर विशेष सर्जनात्मकता की अपेक्षा रखता है। इस प्रक्रिया में रचना का कायाकल्प तक हो जाता है। इसीलिए इस अपेक्षा पर खरी उतरी रूपांतरित रचना नितांत मौलिक प्रतीत होती है। रूपांतर के प्रकारों से यह बोध होता है कि यह 'पाठ का पाठ रूप में', 'पाठ रूप की मंचीय प्रस्तुतीपरक अंतरण', 'पाठ का श्रव्यांतरण' और 'पाठ का स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण' के तौर पर देखा जा सकता है। ये सभी आयाम या फिर कहा जाए कि रूपांतरण के ये सभी प्रकार अनुवाद व्यवहार के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।

इकाई के पढ़ने के बाद अब आपको यह भी स्पष्ट हो गया है कि रूपांतरण का अनुवाद से संदर्भ केवल उसके प्रकारों तक ही व्याप्त नहीं है। रूपांतरण के हमें अनेक स्तर नजर आते हैं। जैसे, भाषिक रूपांतरण (linguistic adaptation), विषय–वस्तुपरक रूपांतरण (thematic adaptation), विधात्मक रूपांतरण (formal adaptation), प्रारूपिक रूपांतरण (format adaptation), 'देशीकरण' (domestication), और 'विनियोगीकरण' (ppropriation)।

कुल मिलाकर, प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको 'रूपांतरण' के प्रकारों और स्तरों का स्पष्ट बोध हो गया होगा।

## 6.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. सदृश और विषम भाषा रूपांतरण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. प्रस्तुति के संदर्भ में रूपांतरण के विभिन्न प्रकारों का विवेचन कीजिए।
3. भाषिक और विषय–वस्तुपरक रूपांतरण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
4. विधात्मक और प्रारूपिक रूपांतरण में भिन्नता के आयामों को उद्‌घाटित कीजिए।
5. 'देशीकरण' और 'विनियोगीकरण' पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए।

## 6.7 उपयोगी पुस्तकें


- टी. बेल रोजर, 'ट्रांसलेशन एंड ट्रांसलेटिंग : थ्योरी एंड प्रैक्टिस', पहला संस्करण, लौंगमैन ग्रुप यू.के, लंदन, 1991।
- बेसनेट सूसन, 'ट्रांसलेशन स्टडीज', रूटलेज, लंदन, 1991।
- जगमोहन, 'डॉक्यूमेंट्री फिल्म्स एंड इंडियन अवेकनिंग' प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1990।
- घटक ऋत्विक, 'सिनेमा एंड आई', ऋत्विक मेमोरियल ट्रस्ट, रूपा एंड कंपनी, कोलकाता, 1987।
- ब्लूस्टोन, जॉर्ज, 'नॉवेल इनटू फिल्म्स', यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस, बर्कले, 1957।
- के. लैंगर सुसान, 'फीलिंग्स एंड फॉर्म', पहला संस्करण, रूटलेज एंड केगन पॉल, लंदन, 1953।
- स्टैम, रॉबर्ट और रैनगो, अलेसांड्रा (संपा.), 'ए कम्पैनियन टू लिटरेचर एंड फिल्म', यू.एस.ए., ब्लैकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड, माल्डेन, 2004।
- एडोर्नो, थियोडोर, 'कल्चर इंडस्ट्री रिकंसिडरेशन', द कल्चर इंडस्ट्री. सेलेक्टिड एसेज ऑन मास कल्चर, लंदन, रूटलेज, 1991/2000।


ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY